मुरसले आज़म (स०) ने फ़रमाया

1– इन्सान गुनाह की वजह से अपनी मुअय्यन (क़िस्मत की) रोज़ी से भी महरूम हो जाता है।

2– जो शख़्स झूठ बोल कर लोगों को हंसाता है उस पर बड़ा अफ़सोस है।

3– जो अपना सामान ख़ुद उठाये वह घमण्ड से महफ़ूज़ रहेगा।

4– जिसका लिबास राह चलते हुए ज़मीन पर रगड़ता हो (बड़ा होने की वजह से) तो क़यामत के दिन ख़ुदावन्दे आलम उसकी तरफ़ नज़र भी न करेगा।

5– नेक साथी तन्हाई से बेहतर है और तन्हाई ख़ामोशी से बेहतर है और ख़ामोशी शर व फ़साद से बेहतर है।

6– बेहतरीन नेकी लोगों में इत्तेहाद क़ायम करना है।

7– ज़रूरतमन्दों की मदद करने से बुरी मौत से नजात मिलती है।

8– फ़ुज़ूल बातचीत से परहेज़ करो और ज़रूरत भर ही बोला करो।

9– ज़बान के अलावा कोई चीज़ ज़्यादा देर क़ैद किये जाने की हक़दार नहीं है।

इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ०) ने फ़रमाया

1– नेक बातें लिखो और उनको अपने भाइयों में तक़सीम करो

2– अगर कोई तुम पर एहसान करे तो उसके एहसान को चुकाओ और अगर यह नहीं कर सकते हो तो उसके लिए दुआ करो।

3– जिस घर में या मजलिस (मीटिंग) में मुहम्मद (स0) का नाम मौजूद हो वह बरकत वाला और मुबारक है।

4– शुरु वक़्त में नमाज़ अदा करो और अपने दीन की बुनियाद को मज़बूत करो।

5– खुदा की ख़ुशी माँ–बाप की ख़ुशी के साथ है।

6– जो शख़्स बुराई से दूरी इख़्तियार करता है उसे इज़्ज़त मिलती है।

7– अपने माँ–बाप से नेकी करो ताकि तुम्हारी औलाद तुम से नेकी करे।

8– खुदा उस शख़्स पर रहमत नाज़िल करे जो इल्म को ज़िन्दा रखे।

9– नेक काम इन्सान को मुसीबतों से बचाते हैं।